|| Shree Ganeshaya Namaha ||

Lal Kitaab Report

Kundali Veda

kundaliveda.com

Your Astrology Partner

लाल किताब ग्रह, घर एवं कुण्डली

ग्रह स्थिति

ग्रह	राशि	स्थिति	सोया	किस्मत जगानेवाला	मंदा/नेक
सूर्य	धनु	मित्र	हाँ	नहीं	नेक / शुभ
चंद्र	मकर	सम	हाँ	नहीं	मंदा / अशुभ
मंगल	धनु	मित्र	हाँ	नहीं	नेक / शुभ
बुध	मकर	सम	हाँ	नहीं	मंदा / अशुभ
गुरु	तुला	शत्रु	हाँ	नहीं	मंदा / अशुभ
शुक्र	वृश्चिक	सम	हाँ	नहीं	नेक / शुभ
शनि	मीन	सम	हाँ	नहीं	नेक / शुभ
राहु	कुंभ	---	नहीं	नहीं	मंदा / अशुभ
केतु	सिंह	---	नहीं	नहीं	मंदा / अशुभ

ग्रहो के घर की स्थिति

खाना सं.	मालिक	पक्काघर	किस्मत	सोया	उच्च	नीच
1	मंगल	सूर्य	मंगल	---	सूर्य	शनि
2	शुक्र	गुरु	चंद्र	हाँ	चंद्र	---
3	बुध	मंगल	बुध	हाँ	राहु	केतु
4	चंद्र	चंद्र	चंद्र	हाँ	गुरु	मंगल
5	सूर्य	गुरु	सूर्य	हाँ	---	---
6	बुध	बुध केतु	केतु	हाँ	बुध राहु	शुक्र केतु
7	शुक्र	शुक्र बुध	शुक्र	हाँ	शनि	सूर्य
8	मंगल	मंगल शनि	चंद्र	हाँ	---	चंद्र
9	गुरु	गुरु	शनि	नहीं	केतु	राहु
10	शनि	शनि	शनि	नहीं	मंगल	गुरु
11	शनि	शनि	गुरु	---	---	---
12	गुरु	गुरु राहु	राहु	---	शुक्र केतु	बुध राहु

लाल किताब कुण्डली

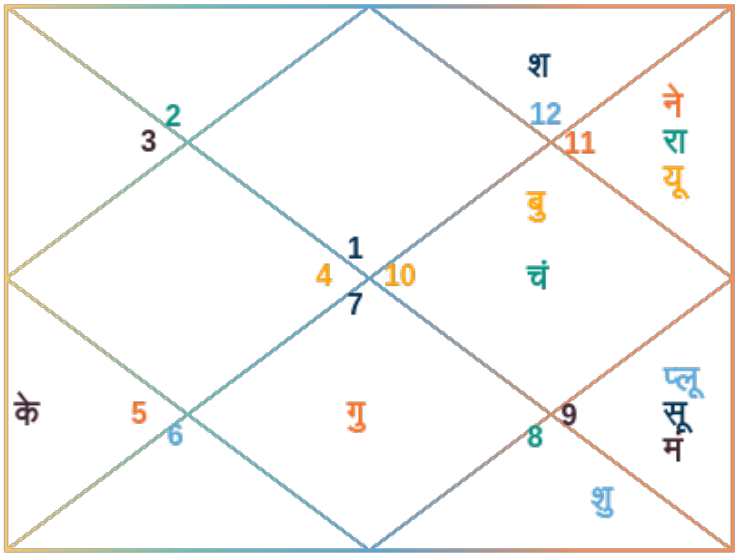

लाल किताब दशा (महादशा एवं अन्तर्दशा)

शनि 6 वर्ष 08/11/1991 08/11/1997		
राहु	:	08/11/1993
बुध	:	08/11/1995
शनि	:	08/11/1997

राहु 6 वर्ष 08/11/1997 08/11/2003		
मंगल	:	08/11/1999
केतु	:	08/11/2001
राहु	:	08/11/2003

केतु 3 वर्ष 08/11/2003 08/11/2006		
शनि	:	08/11/2004
राहु	:	08/11/2005
केतु	:	08/11/2006

गुरु 6 वर्ष 08/11/2006 08/11/2012		
केतु	:	08/11/2008
गुरु	:	08/11/2010
सूर्य	:	08/11/2012

सूर्य 2 वर्ष 08/11/2012 08/11/2014		
सूर्य	:	08/07/2013
चंद्र	:	08/03/2014
मंगल	:	08/11/2014

चंद्र 1 वर्ष 08/11/2014 08/11/2015		
गुरु	:	08/03/2015
सूर्य	:	08/07/2015
चंद्र	:	08/11/2015

शुक्र 3 वर्ष 08/11/2015 08/11/2018		
मंगल	:	08/11/2016
सूर्य	:	08/11/2017
चंद्र	:	08/11/2018

मंगल 6 वर्ष 08/11/2018 08/11/2024		
मंगल	:	08/11/2020
शनि	:	08/11/2022
शुक्र	:	08/11/2024

बुध 2 वर्ष 08/11/2024 08/11/2026		
चंद्र	:	08/07/2025
मंगल	:	08/03/2026
गुरु	:	08/11/2026

शनि 6 वर्ष 08/11/2026 08/11/2032		
राहु	:	08/11/2028
बुध	:	08/11/2030
शनि	:	08/11/2032

राहु 6 वर्ष 08/11/2032 08/11/2038		
मंगल	:	08/11/2034
केतु	:	08/11/2036
राहु	:	08/11/2038

केतु 3 वर्ष 08/11/2038 08/11/2041		
शनि	:	08/11/2039
राहु	:	08/11/2040
केतु	:	08/11/2041

गुरु 6 वर्ष 08/11/2041 08/11/2047		
केतु	:	08/11/2043
गुरु	:	08/11/2045
सूर्य	:	08/11/2047

सूर्य 2 वर्ष 08/11/2047 08/11/2049		
सूर्य	:	08/07/2048
चंद्र	:	08/03/2049
मंगल	:	08/11/2049

चंद्र 1 वर्ष 08/11/2049 08/11/2050		
गुरु	:	08/03/2050
सूर्य	:	08/07/2050
चंद्र	:	08/11/2050

शुक्र 3 वर्ष 08/11/2050 08/11/2053		
मंगल	:	08/11/2051
सूर्य	:	08/11/2052
चंद्र	:	08/11/2053

मंगल 6 वर्ष 08/11/2053 08/11/2059		
मंगल	:	08/11/2055
शनि	:	08/11/2057
शुक्र	:	08/11/2059

बुध 2 वर्ष 08/11/2059 08/11/2061		
चंद्र	:	08/07/2060
मंगल	:	08/03/2061
गुरु	:	08/11/2061

शनि 6 वर्ष 08/11/2061 08/11/2067		
राहु	:	08/11/2063
बुध	:	08/11/2065
शनि	:	08/11/2067

राहु 6 वर्ष 08/11/2067 08/11/2073		
मंगल	:	08/11/2069
केतु	:	08/11/2071
राहु	:	08/11/2073

केतु 3 वर्ष 08/11/2073 08/11/2076		
शनि	:	08/11/2074
राहु	:	08/11/2075
केतु	:	08/11/2076

गुरु 6 वर्ष 08/11/2076 08/11/2082		
केतु	:	08/11/2078
गुरु	:	08/11/2080
सूर्य	:	08/11/2082

सूर्य 2 वर्ष 08/11/2082 08/11/2084		
सूर्य	:	08/07/2083
चंद्र	:	08/03/2084
मंगल	:	08/11/2084

चंद्र 1 वर्ष 08/11/2084 08/11/2085		
गुरु	:	08/03/2085
सूर्य	:	08/07/2085
चंद्र	:	08/11/2085

शुक्र 3 वर्ष 08/11/2085 08/11/2088		
मंगल	:	08/11/2086
सूर्य	:	08/11/2087
चंद्र	:	08/11/2088

मंगल 6 वर्ष 08/11/2088 08/11/2094		
मंगल	:	08/11/2090
शनि	:	08/11/2092
शुक्र	:	08/11/2094

बुध 2 वर्ष 08/11/2094 08/11/2096		
चंद्र	:	08/07/2095
मंगल	:	08/03/2096
गुरु	:	08/11/2096

लाल किताब फलकथन

सूर्य नवा भाव नीच राशि	चंद्र दसवा भाव नीच राशि	मंगल नवा भाव सम-राशि	बुध दसवा भाव सम-राशि
गुरु सातवा भाव मित्र राशि	शुक्र आठवा भाव नीच राशि	शनि बारहवा भाव स्व-राशि	राहु ग्यारवा भाव अनुपलब्ध
केतु पांचवा भाव अनुपलब्ध			

सूर्य आपके नवे भाव में स्थित है

नवमें भाव स्थित सूर्य यदि अनुकूल हो तो जातक भाग्यशाली, अच्छे स्वभाव वाला, अच्छे पारिवारिक जीवन वाला और हमेशा दूसरों की मदद करने वाला होगा। यदि बुध पांचवें घर में होगा तो जातक का भाग्योदय 34 साल के बाद होगा। यदि नवमें भाव स्थित सूर्य अनुकूल न हो तो जातक बुरा और अपने भाइयों के द्वारा परेशान किया जाएगा। सरकार से अरुचि और प्रतिष्ठा की हानि।

उपाय:

(1) उपहार या दान के रूप में चांदी की वस्तुएं कभी स्वीकार न करें। चांदी की वस्तुएं अक्सर दान करते रहें।

(2) पैतृक बर्तन और पीतल के बर्तन नहीं बेचना चाहिए बल्कि इन्हें हमेशा इस्तेमाल करना चाहिए।

(3) अत्यधिक क्रोध और अत्यधिक कोमलता से बचें।

चंद्र आपके दसवे भाव में स्थित है

दसवां घर हर तरीके में शनि द्वारा शासित है। इस घर से चौथे घर के द्वारा को देखा जाता है, जो चंद्रमा द्वारा शासित होता है। इसलिए इस घर में स्थित चंद्रमा जातक को लंबी आयु प्रदान करता है। चंद्रमा और शनि आपस में शत्रु हैं इसलिए, तरल रूप में दवाओं का सेवन जातक के लिए हमेशा हानिकारक साबित होगा। रात में दूध का सेवन जहर के समान कार्य करता है। यदि जातक चिकित्सक है तो उसके द्वारा रोगी को दी जाने वाली दवाएं यदि शुष्क हों तो मरीज पर इलाज का जादुई प्रभाव पड़ेगा। यदि जातक सर्जन है तो सर्जरी के माध्यम से वह महानता और प्रसिद्धि अर्जित करेगा। यदि दूसरा और चौथा भाव खाली हो तो

जातक पर पैसों की बरसात होगी। शनि से संबंधित वस्तुएं और व्यवसाय जातक के लिए फायदेमंद साबित होगा।

उपाय:

(1) धार्मिक स्थानों की यात्रा भाग्य वृद्धि में सहायक होगी।

(2) बारिश अथवा नदी का प्राकृतिक जल किसी कंटेनर (कनस्तर) में भर कर अपने घर के भीतर 15 साल तक रखें। यह दशम भाव में स्थित चंद्रमा के विषाक्त और बुरे प्रभाव को धो देगा।

(3) रात में दूध न पिएं।

(4) दुधारू पशु न तो आपके घर में लंबे समय तक रह पाएंगे और न ही वो आपके लिए फायदेमंद और शुभ साबित होंगे।

(5) शराब, मांस, और व्यभिचार से बचें।

मंगल आपके नवे भाव में स्थित है

यह घर मंगल ग्रह के मित्र बृहस्पति का है। इस भाव में स्थित मंगल ग्रह बडों का आशिर्वाद और मदद दिलाकर जातक के लिए हर ढंग से अच्छा साबित होगा। जातक के भाइयों की पत्नियां जातक के लिए भाग्यशाली रहेंगी। सामान्यत: उसके अपने पिता की तरह कई भाई होंगे। भाइयों के साथ एक संयुक्त परिवार में रहने पर जातद के सुख में हर ओर से वृद्धि होगी। जातक अपनी उम्र के 28 वें वर्ष तक एक अत्यंत प्रतिष्ठित प्रशासनिक पद प्राप्त कर लेगा। जातक युद्ध से जुड़े सामान के व्यापार में भारी मुनाफा कमा सकता है।

उपाय:

(1) अपने बड़े भाई की आज्ञा मानें।

(2) अपनी भाभी की सेवा करें।

(3) नास्तिक न बनें और अपने पारंपरिक और धार्मिक रीति - रिवाजों का पालन करें।

(4) धार्मिक और पूजा स्थलों पर चावल, दूध और गुड़ चढ़ाएं।

बुध आपके दसवे भाव में स्थित है

दसम भाव का बृहस्पति सरकार की ओर से सहयोग प्रदान करता है। आजीविका के अच्छे साधन देता है। जातक को अपना काम हर तरह से करना आता है। किसी शेरमुखी घर में व्यापार करना जातक के लिए अच्छा रहेगा लेकिन ऐसे घर में निवास करना विनाशकारी होगा।

उपाय:

1) शराब, मांस, अंडे और बहुत अधिक भोजन खाने से बचें।

(2) चावल और दूध धार्मिक स्थानों में दान करें।

गुरु आपके सातवे भाव में स्थित है

सातवां घर शुक्र का होता है, अत: यह मिश्रित परिणाम देगा। जातक का भाग्योदय शादी के बाद होगा और जातक धार्मिक कार्यों में शामिल होगा। घर के मामले में मिलने वाला अच्छा परिणाम चंद्रमा की स्थिति पर निर्भर करेगा। जातक देनदार नहीं हो सकता है लेकिन उसके अच्छे बच्चे होंगे। यदि सूर्य पहले भाव में हो तो जातक एक अच्छा ज्योतिषी और आराम पसंद होगा। लेकिन यदि बृहस्पति सातवें भाव में नीच का हो और शनि नौवें भाव में हो तो जातक चोर हो सकता है। यदि बुध नौवें भाव में हो तो जातक के वैवाहिक जीवन परेशानियों से भरा होगा। यदि बृहस्पति नीच का हो तो जातक को भाइयों से सहयोग नहीं मिलेगा साथ ही वह सरकार के समर्थन से भी वंचित रह जाएगा। सातवें घर में बृहस्पति पिता के साथ मतभेद का कारण बनता है। ऐसे में जातक को चाहिए कि वह कभी भी किसी को कपड़े दान न करे, अन्यथा वह बडी गरीबी की चपेट में आ जाएगा।

उपाय:

(1) भगवान शिव की पूजा करें।

(2) घर में किसी भी देवता की मूर्ति न रखें।

(3) हमेशा अपने साथ किसी पीले कपडे में बांध कर सोना रखें।

(4) पीले कपडे पहने हुए साधु और फ़कीरों से दूर रहें।

शुक्र आपके आठवे भाव में स्थित है

इस घर में कोई ग्रह शुभ नहीं माना जाता है यहां तक कि शुक्र भी इस घर में बिगड जाता है और जहरीला हो जाता है। ऐसे जातक का जीवनसाथी गुस्सैल और अत्यधिक चिड़चिड़ा हो जाता है। उसके मुँह से निकली बुरी बातें निश्चित रूप से सच साबित होती हैं। जातक स्वयं की सहानुभूति से पीड़ित हो जाएगा। किसी की गारंटी या जमानत लेना विनाशकारी साबित होगा। यदि दूसरे भाव में कोई ग्रह न हो तो 25 साल से पहले शादी न करें अन्यथा जीवनसाथी को कष्ट पहुंचेगा।

उपाय:

(1) कोई भी वस्तु दान के रूप में स्वीकार न करें।

(2) नियमित रूप से मन्दिर जाएं और पूजा स्थलों तथा मंदिरों में सिर झुकाएं।

(3) तांबे के सिक्के या नीले फूल लगातार दस दिनों तक गटर या गंदे नाले में फेंकें।

शनि आपके बारवे भाव में स्थित है

शनि इस घर में अच्छा परिणाम देता है। जातक के दुश्मन नहीं होंगे। उसके कई घर होंगे। उसके परिवार और व्यापार में वृद्धि होगी। वह बहुत अमीर हो जाएगा। हालांकि, यदि जातक शराब पिए, मांशाहार करे या अपने घर के अंधेरे कमरे में रोशनी करे तो शनि नीच का हो जाएगा।

उपाय:

(1) किसी काले कपड़े में बारह बादाम बांधकर उसे किसी लोहे के बर्तन में भरकर किसी अंधेरे कमरे में रखने से अच्छे परिणाम मिलेंगे।

राहु आपके ग्यारवे भाव में स्थित है

ग्यारहवां घर शनि और बृहस्पति दोनों के प्रभाव में होता है। जब तक जातक के पिता जीवित हैं तब तक जातक अमीर होगा। वैकल्पिक रूप से, बृहस्पति की वस्तुएं रखना सहयोगी सिद्ध होंगी। जातक के दोस्त अच्छे नहीं होंगे। उसे मतलबी लोगों से पैसा मिलेगा। पिता की मृत्यु के बाद जातक को गले में सोना पहनना चाहिए। यदि राहू के साथ नीच का मंगल ग्यारहवें भाव में हो तो जातक के जन्म के समय घर में सारी चीजें होंगी लेकिन धीरे धीरे करके सारी चीजें बरबाद होनें लगेंगी। यदि ग्यारहवें भाव में अशुभ राहू हो तो जातक के अपने पिता सम्बंध ठीक नहीं होंगें यहां तक की जातक उन्हें मार भी सकता है। दूसरे भाव में स्थित ग्रह शत्रु की तरह कार्य करेंगे। यदि बृहस्पति या शनि तीसरे या ग्यारहवें भाव में हों तो शरीर में लोहा पहनें और चांदी की गिलास में पानी पिएं। पांचवें भाव में स्थित केतू बुरे परिणाम देगा। कान, रीढ़, मूत्र से संबंधित समस्याएं या रोग हो सकते हैं। केतु से संबंधित व्यापार में नुकसान हो सकता है।

उपाय:

(1) लोहा पहनें और पीने के पानी के लिए चांदी का गिलास का प्रयोग करें।

(2) कभी भी कोई बिजली का उपकरण उपहार के रूप में न लें।

(3) नीलम, हाथीदांत या हाथी का खिलौने से दूर रहें।

केतु आपके पांचवे भाव में स्थित है

पांचवां घर सूर्य का होता है। यह बृहस्पति से भी प्रभावित होता है। यदि बृहस्पति, सूर्य या चंद्रमा चौथे, छठवें या बारहवें घर में हों तो आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी होगी और जातक को पांच पुत्र हो सकते हैं। चौबीस साल की उम्र के बाद केतू स्वयमेव शुभ हो जाता है। यदि पांचवें भाव में केतू अशुभ हो तो जातक अस्थमा से पीडित हो सकता है। केतू पांच साल की उम्र तक अशुभ परिणाम देता है। संतान सम्बन्धी समस्याएं होती हैं। उम्र के चौबीस साल बाद ही आजीविका शुरू होती है। जातक अपने पुत्रों के लिए शुभ नहीं होता।

उपाय:

(1) दूध और चीनी दान करें।

(2) बृहस्पति के उपाय उपयोगी रहेंगे।

लाल किताब टेवा

धर्मी कुण्डली

लक्षण: लाल किताब में कुछ कुण्डलियों को धर्मी टेवा कहा जाता है। लाल किताब के अनुसार राहू, केतू और शनि को अशुभ ग्रह कहा गया है। यदि कोई कुण्डली धर्मी होती है तो राहू, केतू अशुभ फल नहीं देते। यद्यपि यह जरूरी नहीं कि वो शुभ फल देंगे लेकिन अशुभफल देना बंद जरूर कर देते हैं।
राहू और केतू तब धर्मी हो जाते हैं जब वें चौथे भाव में बैठे होते हैं, अथवा किसी भी भाव में चन्द्रमा के साथ स्थित हों। शनि तब धर्मी होता है जब वह ग्यारहवें भाव में स्थित हो अथवा किसी भी भाव में बृहस्पति के साथ बैठा हो। यदि दोनो स्थितियां लागू होती हो तो कुण्डली धर्मी टेवा कहलाती है।

परिणाम: आपकी कुण्डली, धर्मी कुण्डली नहीं है।

रतांध कुण्डली

लक्षण: रतांध ग्रह लाल किताब की एक अनूठी अवधारणा है। कोई कुण्डली तब रतांध कही जाती है जब उसमें शनि सातवें भाव में हो और सूर्य चौथे भाव में।
अंधी कुण्डली की तरह, रतांध कुण्डली वाला जातक दिग्भ्रमित हो जाता है और अपने से अपना कोई निर्णय नही ले पाता। जातक किसी रतौंधी ग्रस्त व्यक्ति की तरह व्यवहार करता है।

परिणाम: आपकी कुण्डली, रतांध कुण्डली नहीं है।

अंधी कुण्डली

लक्षण: कुण्डली का दशम भाव कुण्डली की नीव की तरह होता है। क्योंकि भाव व्यवसाय, रोजगार, प्रतिष्ठा, प्रसिद्धि और सरकार से मिलने वाले सहयोग का है। यदि दशम भाव में एक दूसरे के शत्रु ग्रह बैठे हों अथवा पीडित अवस्था के ग्रह, जैसे अस्त ग्रह आदि हो तो सभी ग्रह अच्छे परिणाम नहीं देते। जिस कुण्डली में ऐसी युतियां हो वह अंधी कुण्डली (टेवा) कहलाती है और ऐसा जातक किसी अंधे या दिग्भ्रमित व्यक्ति की तरह व्यवहार करता है।

परिणाम: आपकी कुण्डली, अंधी कुण्डली नहीं है।

नाबालिग कुण्डली

लक्षण: लाल किताब के अनुसार कुछ स्थितियों में कुछ कुण्डलियों को 12 साल की उम्र तक नाबालिग

कुण्डली माना जाता है। नाबालिग कुण्डली, कुण्डली में बैठे ग्रहों के अनुसार परिणाम नहीं दे सकती है और अप्रत्याशित व्यवहार प्रदर्शित करती है। ऐसी कुण्डली वाले जातक का भाग्य 12 साल की उम्र तक अविश्वसनीय रहता है।

परिणाम: आपकी कुण्डली, नाबालिग कुण्डली नहीं है।

आपके लाल किताब कुंडली पर आधारित ऋण

लाल किताब के अनुसार ऋण कुण्डली की बहुत बडी कमजोरी माने जाते हैं। पूर्वजों का ऋण मतलब अपने पूर्वजों और पितरों के द्वारा किए गए पापों से प्रभावी होगा। दूसरे शब्दों में किसी और के द्वारा की गई गलतियों की सजा रिश्तेदारों को भुगतनी या वहन करनी पडती। यदि किसी की कुण्डली में वास्तव में ऋण होते हैं तो जैसे किसी एक की कुण्डली में दिखता है वैसे ही अन्य रिश्तेदारों की कुण्डली में भी पाया जाता है।

सामान्यत: पूरा परिवार ही ऋण से प्रभावित होता है। इसलिए इनके उपाय पूरे परिवार के सहयोग से करेने पडते हैं। यदि किसी की कुण्डली में ग्रह राजयोग का निर्माण कर रहे हों और वही ग्रह ऋण संबंधी योग का गठन भी कर रहे हों तो केवल बुरे फल ही मिलते हैं।

पितृ ऋण

लक्षण : लाल किताब के अनुसार जब किसी कुण्डली में शुक्र, बुध या राहू दूसरे, पांचवें, नौवें अथवा बारहवें भाव में हों तो जातक पितृ ऋण से पीडित होता है।

कारण: घर पितरो या बडों ने पारिवारिक पुजारी बदला होगा।

संकेत: घर के पास में किसी मंदिर में तोड फोड हुई होगी या कोई पीपल का पेट काटा गया होगा।

उपाय: 1. परिवार के सभी सदस्यों से सिक्के के रूप में पैसे इकट्ठा करें और किसी दिन पूरे पैसे मंदिर में दान कर दें।

2. यदि आपके पडोस या घर में कोई पीपल का पेड हो तो उसे पानी दें और उसकी सेवा करें।

परिणाम: आपकी कुंडली पितृ ऋण से मुक्त है|

स्वय ऋण

लक्षण : लाल किताब के अनुसार जब किसी की कुण्डली में शुक्र, शनि, राहु या केतु पाँचवें भाव में स्थित हों, तो जातक स्वयं के ऋण से पीडित माना जाता।

कारण: आपके पूर्वजों या पितरो नें परिवार के रीति-रिवाज़ों और परम्पराओं को नहीं माना होगा अथवा उन्होंने परमात्मा पर विश्वास नहीं किया होगा।

संकेत: घर के नीचे आग की भट्ठियां होंगी या छत में सूर्य की रोशनी आने के लिए बहुत सारे छेद होंगे।

उपाय: 1. सभी संबंधियों के सहयोग से बराबर-बराबर पैसे इकट्ठा करके यज्ञ कराना चाहिए।

परिणाम: आपकी कुंडली स्वय ऋण से मुक्त है|

मातृ ऋण

लक्षण : लाल किताब के अनुसार जब केतू कुण्डली के चौथे भाव में हो तो कुण्डली को मातृ ऋण से प्रभावित या ग्रसित माना जाता है।

कारण: इस तथ्य के पीछे कारण यह हो सकता है कि आपके पूर्वजों ने किसी मां को उपेक्षित किया हो या उसके साथ अत्याचार किया हो अथवा बच्चे के जन्म के बाद मां को उसके बच्चे से दूर रखा हो, या हो सकता है कि किसी माँ की उदासी को अनदेखा किया हो।

संकेत: पास के कुंए या नदी की पूजा करने के बजाय उसे गंदगी और कचरा डालने के लिए इस्तेमाल किया जा रहा होगा।

उपाय: 1. अपने सभी रक्त (सगे) संबंधियों से बराबर-बराबर मात्रा में चांदी लेकर किसी नदी में बहाएं। यह काम एक ही दिन करना है।

परिणाम: आपकी कुंडली मातृ ऋण से मुक्त है|

पत्नी ऋण

लक्षण : लाल किताब के अनुसार जब सूर्य, चन्द्र या राहु कुण्डली के दूसरे अथवा सातवें भाव में हो, तो कुण्डली को स्त्री-ऋण से ग्रसित माना जाता है।

कारण: इसका कारण यह हो सकता है कि आपके पूर्वजों या बडे बुजुर्गों नें किसी लालच के कारण किसी गर्भवती महिला की हत्या कर दी होगी।

संकेत: घर में ऐसे जानवर होंगे जो दांत वाले हों जैसे कि गाय अथवा ऐसे जानवर जो समूह में न रहते हों।

उपाय: 1. अपने सभी रक्त (सगे) संबंधियों से बराबर-बराबर मात्रा में पैसे लेकर उससे 100 गायों को स्वादिष्ट चारा खिलाएं। यह काम एक ही दिन करना है।

परिणाम: आपकी कुण्डली स्त्री ऋण से मुक्त है।

सम्बंधी ऋण

लक्षण : लाल किताब के अनुसार जब बुध और केतू कुण्डली के पहले अथवा आठवें भाव में हो, तो कुण्डली को सम्बंधी-ऋण से ग्रसित माना जाता है।

कारण: इसका कारण यह हो सकता है कि आपके पूर्वजों ने किसी की फसल या घर में आग लगाई हो, किसी को जहर दिया हो अथवा किसी की गर्भवती भैंस को मार डाला हो।

संकेत: घर में किसी बच्चे के जन्मदिन, त्यौहारों या अन्य उत्सवों के समय अपने परिवार से दूर रहना

अथवा रिश्तेदारों से न मिलना इस दोष के संकेतक हैं।

उपाय: 1. अपने सभी रक्त (सगे) संबंधियों से बराबर-बराबर मात्रा में पैसे लेकर उसे दूसरों की मदद के लिए किसी चिकित्सक को दें। 2. अपने सभी रक्त (सगे) संबंधियों से बराबर-बराबर मात्रा में पैसे लेकर उससे दवाएं खरीद कर धर्मार्थ संस्थाओं को दें।

परिणाम: आपकी कुण्डली सम्बंधी ऋण से मुक्त है।

पुत्री ऋण

लक्षण : लाल किताब के अनुसार जब चन्द्रमा कुण्डली के तीसरे या छठे भाव में हो, तो जातक को पुत्री ऋण से पीडित माना जाता है।

कारण: पूर्वजों या पितरों के द्वारा किसी की बहन या बेटी की हत्या की गई होगी या उन्हें परेशान किया गया होगा।

संकेत: खोए हुए बच्चों को बेचना या उससे लाभ कमाने का प्रयास किया गया हो।

उपाय: 1. सारे सम्बंधी पीले रंग की कौड़ियाँ खरीद कर, एक जगह इकट्ठी करके जलाकर राख कर दें और उस राख को उसी दिन नदी में बहा दें।

परिणाम: आपकी कुण्डली पुत्री ऋण से मुक्त है।

जालिमाना ऋण

लक्षण : लाल किताब के अनुसार जब सूर्य, चन्द्रमा, मंगल कुण्डली के दसवें और ग्यारहवें भाव में हो, तो जातक को जालिमाना -ऋण से ग्रसित माना जाता है।

कारण: इसका कारण यह हो सकता है कि आपके पूर्वजों या पितरों ने किसी से धोखा किया होगा या उसे घर से बाहर निकाल दिया होगा और उसे गुजारे के लिए कुछ नही दिया होगा।

संकेत: घर का मुख्य द्वार दक्षिण दिशा में होगा अथवा घर की जमीन किसी ऐसे व्यक्ति से ली गई होगी जिसके पुत्र न हो या घर किसी सडक या कुएं के ऊपर निर्मित होगा।

उपाय: 1. अलग-अलग जगह की सौ मछलियों या मज़दूरों को सभी परिजन धन इकट्ठा करके एक दिन में भोजन कराएँ।

परिणाम: आपकी कुण्डली जालिमाना ऋण से मुक्त है।

अजन्मा ऋण

लक्षण : लाल किताब के अनुसार जब किसी कुण्डली में सूर्य, शुक्र, मंगल बारहवें भाव में हो, तो जातक इस अजात-ऋण का भागी कहलाता है।

कारण: इसका कारण यह हो सकता है कि आपके पूर्वजों या पितरों ने ससुराल-पक्ष के लोगों को धोखा दिया होगा या किसी रिश्तेदार के परिवार के विनाश में भूमिका निभाई होगी।

संकेत: दरवाजे के नीचे कोई गंदा नाला बह रहा होगा या कोई विनाशित श्मशान होगा अथवा घर की दक्षिणी दीवार से जुडी कोई भट्ठी होगी।

उपाय: 1. सभी परिजनों से एक-एक नारियल लेकर उन्हें एक जगह इकट्ठा करें और उसी दिन नदी में प्रवाहित कर दें।

परिणाम: आपकी कुण्डली अजन्मा ऋण से मुक्त है।

कुदरती ऋण

लक्षण : लाल किताब के अनुसार जब चन्द्रमा, मंगल कुण्डली के छठे भाव में स्थित हों, तो जातक इस कुदरती ऋण से ग्रसित माना जाता है।

कारण: इसका कारण यह हो सकता है कि आपके पूर्वजों या पितरों ने किसी कि बेबस कुत्ते की तरह तहस नहस किया होगा।

संकेत: किसी कुत्ते को गोली से मारना, दूसरे के बेटे को मारना अथवा या भतीजे से इतना कपट करना कि वह पूरी तरह बर्बाद हो जाय।

उपाय: 1. एक दिन में सभी परिजनों के सहयोग से सौ कुत्तों को मीठा दूध या खीर खिलानी चाहिए।
2. अपने पास में रहने वाली उस विधवा स्त्री की सेवा करके उससे आशीर्वाद प्राप्त करना करें जो कम उम्र में ही विधवा हुई हो।

परिणाम: आपकी कुण्डली कुदरती ऋण से मुक्त है।

लाल किताब वार्षिक कुण्डली

लाल किताब वर्षफल कुण्डली 8/11/2023 से 8/11/2024 तक (33 वर्ष)

प्रथम माह (08/11/2023 से 08/12/2023 तक)

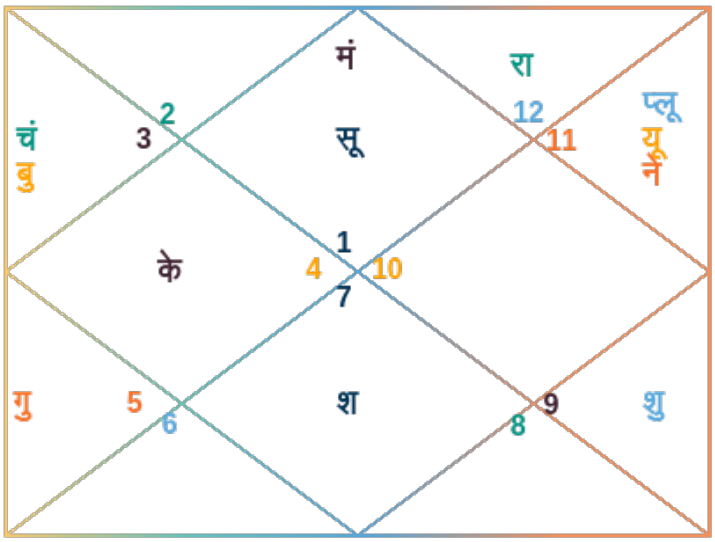

द्वितीय माह (08/12/2023 से 08/01/2024 तक)

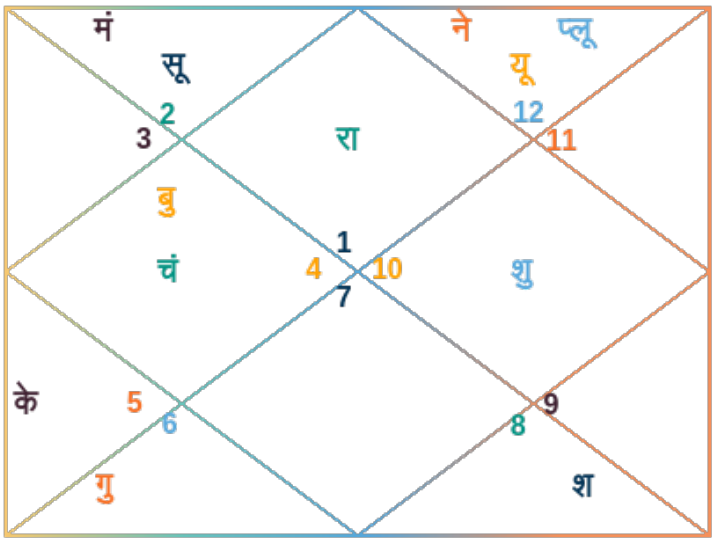

तृतीय माह (08/01/2024 से 08/02/2024 तक)

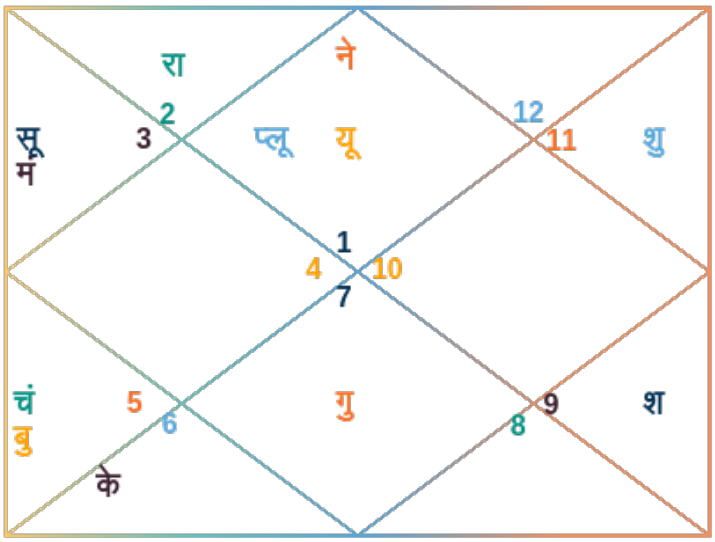

चतुर्थ माह (08/02/2024 से 08/03/2024 तक)

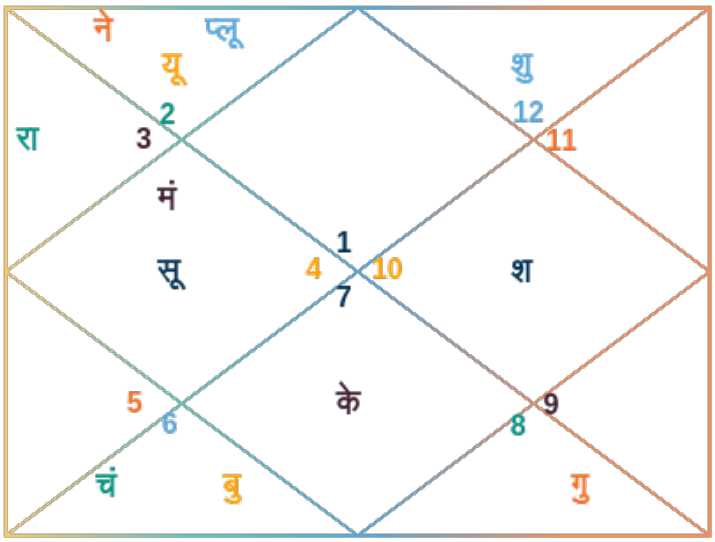

पंचम माह (08/03/2024 से 08/04/2024 तक)

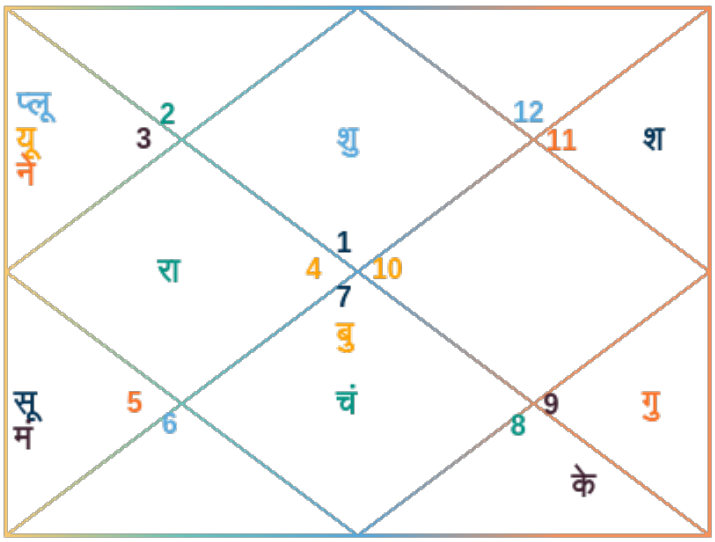

षष्ट माह (08/04/2024 से 08/05/2024 तक)

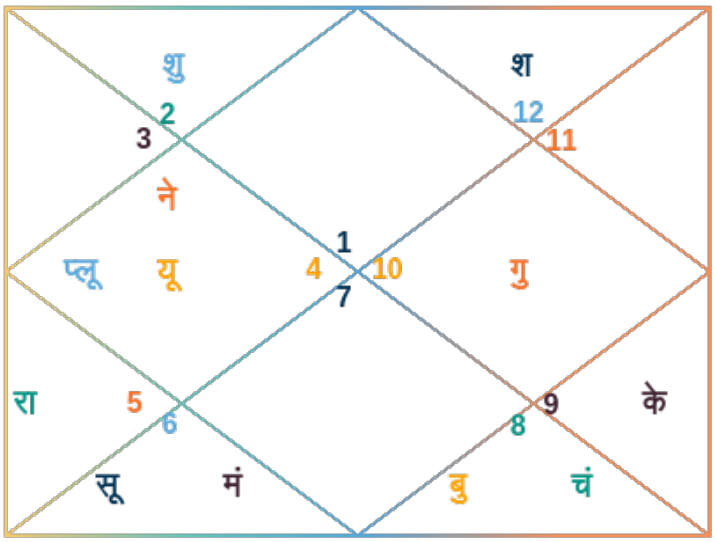

सप्तम माह (08/05/2024 से 08/06/2024 तक)

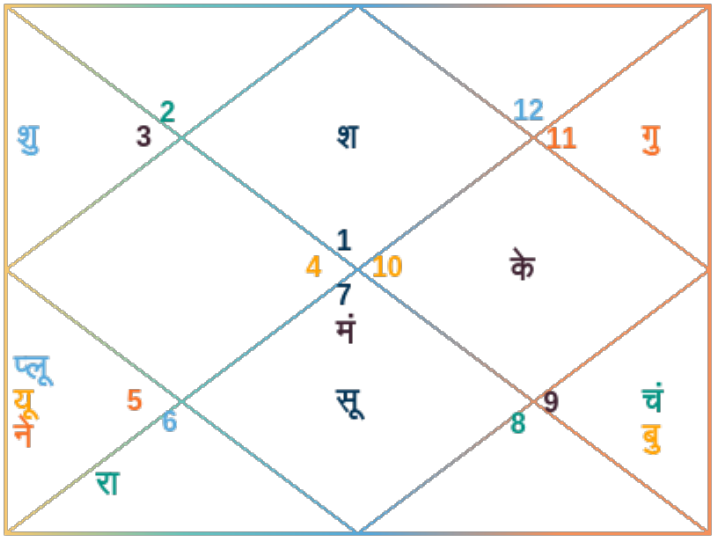

अष्टम माह (08/06/2024 से 08/07/2024 तक)

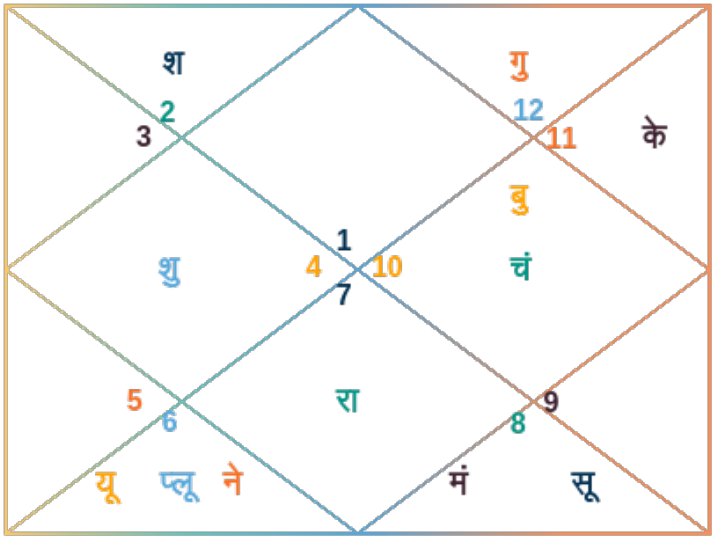

नवम माह (08/07/2024 से 08/08/2024 तक)

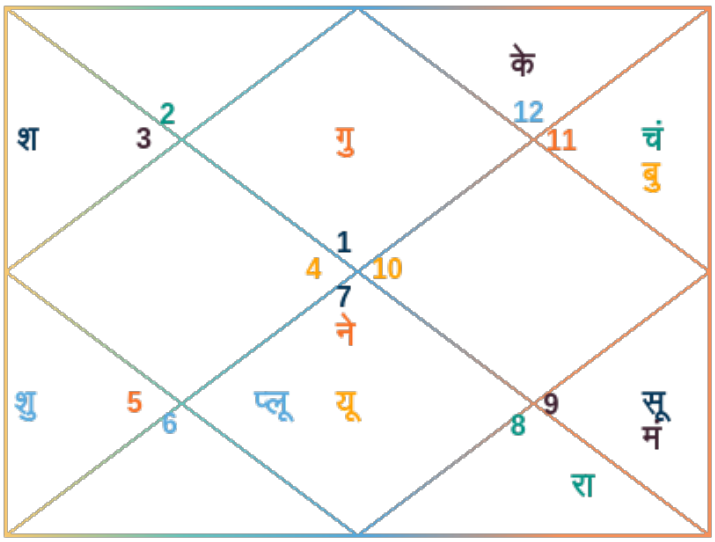

दशम माह (08/08/2024 से 08/09/2024 तक)

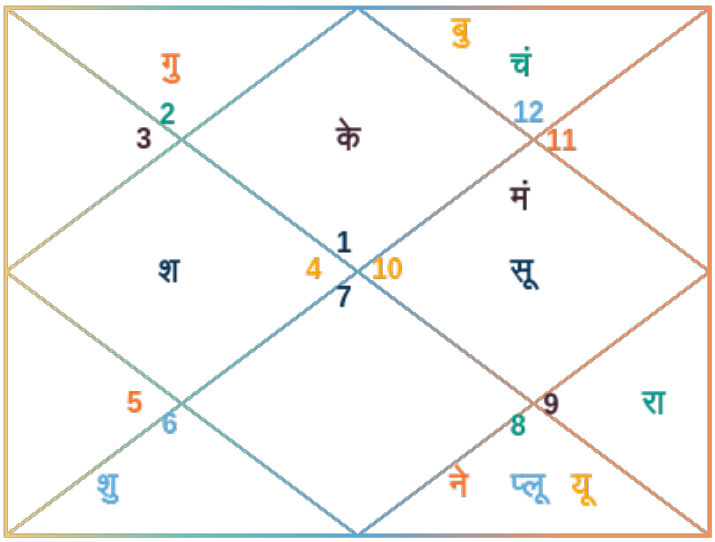

एकादश माह (08/09/2024 से 08/10/2024 तक)

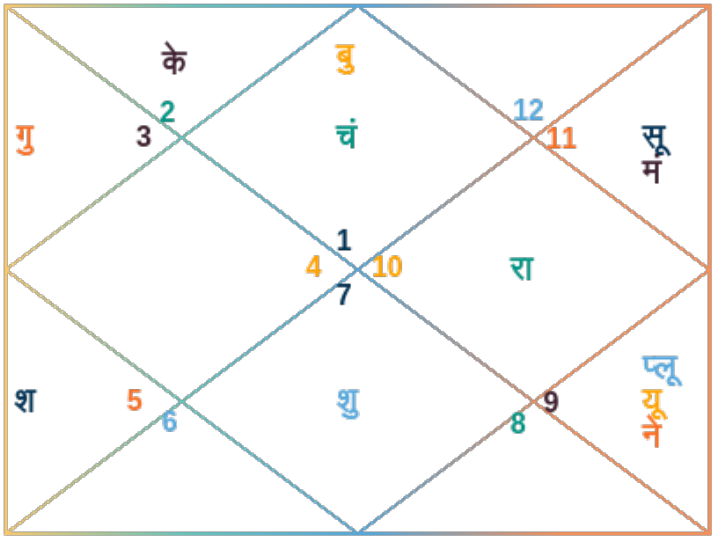

द्वादश माह (08/10/2024 से 08/11/2024 तक)

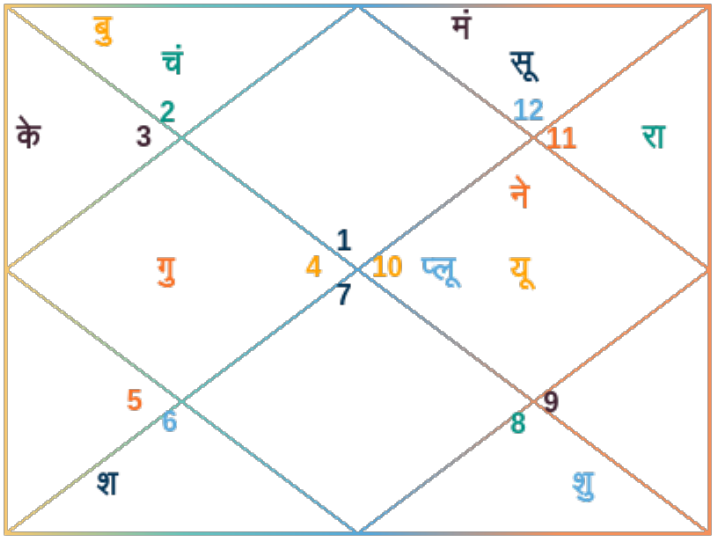

Kundali Veda

Thank You

Refer and Earn 20% Commission

For More Details Mail or Call us at +91-9693579531

Email - kundaliveda@gmail.com

www.kundaliveda.com